समन्वय

I. अपनी सेवकाई से पूर्व मसीह के जीवन का काल।
   क. लूका की भूमिका और समर्पण (लूका 1:1-4)।
   ख. यूहन्ना में परिचय (यूहन्ना 1:1-18)।
   ग. मत्ती में यीशु की वंशावली (मत्ती 1:1-17)।
   घ. लूका में यीशु की वंशावली (लूका 3:23-38)।
   ड. यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले के जन्म की जकर्याह के पास स्वर्गदूत द्वारा घोषणा (लूका 1:5-25)।
   च. यीशु के जन्म की मरियम के पास स्वर्गदूत द्वारा घोषणा (1:26-38)।
   छ. मरियम (यीशु की होने वाली मां) का इलिशबा (यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले की होने वाली मां) के पास जाना (लूका 1:39-56)।
   ज. यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले का जन्म और प्रारम्भिक जीवन (लूका 1:57-80)।
   झ. यीशु के आने की यूसुफ के पास घोषणा (मत्ती 1:18-25)।
   ञ. यीशु का जन्म (लूका 2:1-7)।
   ट. चरवाहों के पास यीशु के जन्म की घोषणा (लूका 2:8-20)।
   ठ. यीशु का खतना और नामकरण; मंदिर में (लूका 2:21-39)।
   ड. पूर्व से आए ज्योतिषियों (''पण्डितों'') का यीशु के दर्शन के लिए आना (मत्ती 2:1-12)।
   ढ. मिस्र में जाना व बैतलहम में बच्चों का मारा जाना (मत्ती 2:13-18)।
   ण. बालक यीशु को मिस्र से नासरत में लाया गया (मत्ती 2:19-23; देखें लूका 2:39ख)।
   त. यीशु का नासरत में रहना; बारह वर्ष की आयु में यरूशलेम में जाना (लूका 2:40-52)।

II. यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले की सेवकाई का आरम्भ।
   क. यूहन्ना की सेवकाई (मत्ती 3:1-6; मरकुस 1:1-6; लूका 3:1-6)।
   ख. यूहन्ना का संदेश (मत्ती 3:7-12; मरकुस 1:7, 8; लूका 3:7-18)।

III. यीशु की सेवकाई का आरम्भ।
   क. यूहन्ना से यरदन नदी में यीशु का बपस्तिमा (मत्ती 3:13-17; मरकुस 1:9-11; लूका 3:21, 22; यूहन्ना 1:31-34)।
   ख. जंगल में यीशु की परीक्षा हुई (मत्ती 4:1-11; मरकुस 1:12, 13; लूका 4:1-13)।
   ग. यीशु के विषय में यूहन्ना की गवाही (यूहन्ना 1:19-34)।

घ. यीशु के प्रारम्भिक चेले (यहूदिया में) (यूहन्ना 1:35-51)।

ड. यीशु का पहला आश्चर्यकर्म (काना गलील में) (यूहन्ना 2:1-11)।

च. कफ़रनहूम में यीशु का पहला ठिकाना (गलील में) (यूहन्ना 2:12)।

IV. पहले से दूसरे फसह तक।

क. यीशु का सेवकाई का पहला फसह।

1. मंदिर को शुद्ध करना (यूहन्ना 2:13-25)।
2. निकुदेमुस को सिखाना (यूहन्ना 3:1-21)।

ख. यहूदिया में प्रथम सेवकाई (और यूहन्ना की और गवाही) (यूहन्ना 3:22-36)।

ग. यहूदिया से गलील में जाना।

1. जाने के कारण (मत्ती 4:12; मरकुस 1:14; लूका 3:19, 20; यूहन्ना 4:1-3)।
2. सामरिया की घटना (यूहन्ना 4:4-42)।
3. गलील में पहुंचना (लूका 4:14; यूहन्ना 4:43-45)।

घ. गलील में यीशु की शिक्षा का एक सामान्य विवरण (मत्ती 4:17; मरकुस 1:14, 15; लूका 4:14, 15)।

ड. काना में दूसरा आश्चर्यकर्म (यूहन्ना 4:46-54)।

च. कफ़रनहूम से गलील में जाना (मत्ती 4:13-16)।

छ. चार मछुआरों को बुलाना (मत्ती 4:18-22; मरकुस 1:16-20; लूका 5:1-11)।

ज. कफ़रनहूम में: आराधनालय में दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति को चंगा करना (मरकुस 1:21-28; लूका 4:31-37)।

झ. कफ़रनहूम में: पतरस की सास और अन्य लोगों को चंगा करना (मत्ती 8:14-17; मरकुस 1:29-34; लूका 4:38-41)।

ञ. गलील में: शिक्षा और चंगाई का यीशु का पहला दौरा (मत्ती 4:23-25; मरकुस 1:35-39; लूका 4:42-44)।

ट. गलील में: एक कोढ़ी को चंगा करना-और उसका परिणाम उत्तेजना (मत्ती 8:2-4; मरकुस 1:40-45; लूका 5:12-16)।

ठ. कफ़रनहूम में वापस: एक झोले के मारे को चंगा करना (मत्ती 9:2-8; मरकुस 2:1-12; लूका 5:17-26)।

ड. कफ़रनहूम के निकट: मत्ती को बुलाहट (मत्ती 9:9; मरकुस 2:13, 14; लूका 5:27, 28)।

V. दूसरे से तीसरे फसह तक।

क. यीशु ने सब्त के दिन एक लंगड़े को चंगा किया और अपने कार्य का बचाव किया (यूहन्ना 5:1-47)।

ख. यीशु ने अपने चेलों का बचाव किया जिन्होंने सब्त के दिन अनाज तोड़ा था (मत्ती 12:1-8; मरकुस 2:23-28; लूका 6:1-5)।

ग. यीशु ने सब्त के दिन एक सूखे हाथ वाले आदमी को चंगा करने का समर्थन किया (मत्ती 12:9-14; मरकुस 3:1-6; लूका 6:6-11)।

घ. यीशु ने गलील सागर के पास बहुत से लोगों को चंगा किया (मत्ती 12:15-21; मरकुस 3:7-12)।

ड. प्रार्थना के बाद, यीशु ने बारह प्रेरित चुने (मत्ती 10:2-4; मरकुस 3:13-19; लूका 6:12-16)।

च. पहाड़ी उपदेश।

1. प्रारम्भिक कथन (मत्ती 5:1, 2; लूका 6:17-20)।
2. धन्य वचन: मसीहा के लोगों को प्रतिज्ञाएं (मत्ती 5:3-12; लूका 6:20-26)।
3. मसीहा के लोगों का प्रभाव (और जिम्मेदारियां) (मत्ती 5:13-16)।
4. मसीहा की शिक्षा का पुराने नियम से और पुराने नियम की शिक्षा पर मनुष्यों द्वारा बनाई परम्पराओं से सम्बन्ध। (मत्ती 5:17-48; लूका 6:27-30, 32-36)।
5. धार्मिक कार्य अन्दर से हों, न कि दिखावे के लिए (मत्ती 6:1-18)।
6. सांसारिक चिंताओं के विपरीत स्वर्गीय भंडार सुरक्षित (मत्ती 6:19-34)।
7. दोष लगाने पर शिक्षा (मत्ती 7:1-6; लूका 6:37-42)।
8. प्रार्थना पर शिक्षा (मत्ती 7:7-11)।
9. सुनहरी नियम (मत्ती 7:12; लूका 6:31)।
10. दो मार्ग-और झूठे भविष्यवक्ता (मत्ती 7:13-23; लूका 6:43-45)।
11. निष्कर्ष और प्रासंगिकता (दो मकान बनाने वाले) (मत्ती 7:24-29; लूका 6:46-49)।

छ. एक सूबेदार के सेवक को चंगा किया गया (मत्ती 8:1, 5-13; लूका 7:1-10)।

ज. एक विधवा का पुत्र जिलाया गया (लूका 7:11-17)।

झ. यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले को उत्तर दिया गया (मत्ती 11:2-30; लूका 7:18-35)।

ञ. यीशु के पांव का अभिषेक किया गया (लूका 7:36-50)।

ट. गलील का दूसरा दौरा (लूका 8:1-3)।

ठ. परमेश्वर की निंदा के आरोप (मत्ती 12:22-37; मरकुस 3:20-30; लूका 11:14-23)।

ड. चिह्न ढूंढ़ने वाले (मत्ती 12:38-45; लूका 11:16, 24-26, 29-36)।

ढ. यीशु का परिवार (मत्ती 12:46-50; मरकुस 3:31-35; लूका 8:19-21; 11:27, 28)।

ण. दृष्टांतों का पहला बड़ा समूह।
   1. अवसर व स्थिति (मत्ती 13:1-3; मरकुस 4:1, 2; लूका 8:4)।
   2. बीज बोने वाले का दृष्टांत-और उसकी व्याख्या (मत्ती 13:3-23; मरकुस 4:3-25; लूका 8:5-18)।
   3. उगने वाले बीज का दृष्टांत (मत्ती 4:26-29)।
   4. जंगली बीज का दृष्टांत (मत्ती 13:24-30)।
   5. राई के बीज और खमीर के दृष्टांत (मत्ती 13:31-35; मरकुस 4:30-34)।
   6. जंगली बीज के दृष्टांत की व्याख्या (मत्ती 13:36-43)।
   7. खजाने और मोती के दृष्टांत (मत्ती 13:44-46)।
   8. जाल का दृष्टांत (मत्ती 13:47-53)।

त. तूफ़ान को शान्त करना (मत्ती 8:18, 23-27; मरकुस 4:35-41; लूका 8:22-25)।

थ. दुष्टात्मा से ग्रस्त दो लोगों को चंगा करना (मत्ती 8:28-34; 9:1; मरकुस 5:1-21; लूका 8:26-40)।

द. पापियों के साथ खाना (और उपवास पर सन्देश) (मत्ती 9:10-17; मरकुस 2:15-22; लूका 5:29-39)।

ध. याईर की बेटी को जिलाना (और लहू बहने के रोग वाली स्त्री को चंगा करना) (मत्ती 9:18-26; मरकुस 5:22-43; लूका 8:41-56)।

न. अन्धों को और एक दुष्टात्मा ग्रस्त आदमी को चंगा करना (और आलोचना सहना) (मत्ती 9:27-34)।

प. नासरत में जाना (और ठुकराए जाना) (मत्ती 13:54-58; मरकुस 6:1-6; लूका 4:16-31)।

फ. गलील का यीशु का तीसरा दौरा (और बारह को निर्देश) (मत्ती 9:35-38; 10:1-42; 11:1; मरकुस 6:6-13; लूका 9:1-6)।

ब. यीशु में हेरोदेस की दिलचस्पी (और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु का विवरण) (मत्ती 14:1-12क; मरकुस 6:14-29; लूका 9:7-9)।

भ. यीशु का हेरोदेस के इलाके से निकलना (और वापस आना)।
   1. बारह का लौटना और गलील सागर के पूर्वी तट की ओर जाना (मत्ती 14:12ख, 13; मरकुस 6:30-32; लूका 9:10; यूहन्ना 6:1)।
   2. पांच हज़ार पुरुषों को खिलाना (मत्ती 14:13-21; मरकुस 6:33-44; लूका 9:11-17; यूहन्ना 6:2-14)।
   3. पानी पर चलना (मत्ती 14:22-36; मरकुस 6:45-56; यूहन्ना 6:15-21क)।

म. जीवन की रोटी पर यीशु का सन्देश (और पतरस का अंगीकार) (यूहन्ना

6:21ख-71)।

VI. तीसरे फसह से यीशु के बैतनिय्याह में आने तक।

क. तीसरा फसह (देखें यूहन्ना 6:4; 7:1)।

ख. परम्परा का पालन न करने का दोष लगना (मत्ती 15:1-20; मरकुस 7:1-23)।

ग. हेरोदेस के इलाके से निकलना (मत्ती 15:21; मरकुस 7:24)।

घ. फिनीके (या कनानी जाति) की स्त्री की लड़की को चंगा करना (मत्ती 15:22-28; मरकुस 7:25-30)।

ड. हेरोदेस के इलाके से दूर रहना (मत्ती 15:29; मरकुस 7:31)।

च. एक गूंगे समेत बहुत से लोगों को चंगा करना (मत्ती 15:30, 31; मरकुस 7:32-37)।

छ. चार हज़ार लोगों को खिलाना (मत्ती 15:32-39क; मरकुस 8:1-9)।

ज. हेरोदेस के इलाके से एक और बार निकलना।

1. गलील में: यीशु के शत्रुओं द्वारा एक और आक्रमण-उसके बाद एक और बार निकलना (मत्ती 15:39ख-16:12; मरकुस 8:10-21)।
2. बैतसैदा में: एक अन्धा चंगा किया गया (मरकुस 8:22-26)।
3. कैसरिया फिलिप्पी के निकट: अच्छा अंगीकार (मत्ती 16:13-20; मरकुस 8:27-30; लूका 9:18-21)।
4. कैसरिया फिलिप्पी के निकट: यीशु की मृत्यु की भविष्यवाणी (मत्ती 16:21-28; मरकुस 8:31-38; लूका 9:22-27)।
5. कैसरिया फिलिप्पी के निकट (हर्मोन पर्वत पर?): रूपांतर (मत्ती 17:1-13; मरक्ढप 9:2-13; लूका 9:28-36)।
6. दुष्टात्मा से ग्रस्त एक लड़के को चंगा करना (मत्ती 17:14-21; मरकुस 9:14-29; लूका 9:37-43)।
7. गलील में वापसी पर (यीशु की मृत्यु की फिर भविष्यवाणी) (मत्ती 17:22, 23; मरकुस 9:30-32; लूका 9:43-45)।

झ. मन्दिर का कर देने पर प्रश्न (मत्ती 17:24-27)।

ञ. बच्चों की तरह होने की आवश्यकता पर शिक्षा (मत्ती 18:1-14; मरकुस 9:33-50; लूका 9:46-50)।

ट. गलील में अन्तिम शिक्षा: भाइयों के बीच समस्याएं (मत्ती 18:15-35)।

ठ. सेवकाई बदलकर यहूदिया में जाती है (यूहन्ना 7:1; मत्ती 19:1)।

1. यीशु को उसके भाइयों द्वारा झोंपड़ियों के पर्व में जाने का आग्रह (यूहन्ना 7:2-9)।
2. यीशु का चुपके से यरूशलेम में जाना (लूका 9:51-56; यूहन्ना 7:10)।
3. मार्ग में: चेले बनने पर शिक्षा (लूका 9:57-62; देखें मत्ती 8:19-22)।

ड. यरूशलेम में: झोंपड़ियों का पर्व।

1. पर्व में: मन्दिर में शिक्षा देना (यूहन्ना 7:11-36)।
2. पर्व के अंतिम दिन: जीवन के जल पर शिक्षा (यूहन्ना 7:37-52)।
3. पर्व के बाद: अतिरिक्त शिक्षा।
    क. व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री (यूहन्ना 7:53-8:11)।
    ख. ज्योति और अंधकार पर शिक्षा (यूहन्ना 8:12-59)।
    ग. शारीरिक और आत्मिक अंधकार पर शिक्षा (यूहन्ना 9:1-41)।
    घ. अच्छे चरवाहे और मज़दूरों पर शिक्षा (यूहन्ना 10:1-21)।

ढ. बाद में यहूदिया की सेवकाई।

1. यीशु और सत्तर चेले (लूका 10:1-24)।
2. यीशु और एक व्यवस्थापक (दयालु सामरी का दृष्टांत) (लूका 10:25-37)।
3. यीशु, मरियम, और मारथा (लूका 10:38-42)।
4. यीशु और उसके चेले (प्रार्थना पर शिक्षा) (लूका 11:1-13)।
5. यीशु और एक फरीसी (लूका 11:37-54)।
6. यीशु और लोगों की भीड़ (देखें लूका 12:1, 13, 54; 13:1)।
    क. कपट पर शिक्षा (लूका 12:1-12)।
    ख. भौतिकवाद पर शिक्षा (लूका 12:13-34)।
    ग. चौकसी पर शिक्षा (लूका 12:35-48)।
    घ. आ पहुंची त्रासदी पर शिक्षा (लूका 12:49-59)।
    ड. मन फिराव पर शिक्षा (लूका 13:1-9)।
7. यीशु और एक रोगी स्त्री (सब्त का विवाद) (लूका 13:10-21)।

त. स्थापन का पर्व (लूका 13:22; यूहन्ना 10:22)।

1. उसके शत्रुओं के साथ झगड़ा जारी (यूहन्ना 10:23-30)।
2. उसे मारने के प्रयास जारी (यूहन्ना 10:31-39)।

थ. पिरिया में सेवकाई।

1. यीशु की सेवकाई ''यरदन के पार'' (मत्ती 19:1, 2; मरकुस 10:1; यूहन्ना 10:40-42)।
2. यीशु से पूछताछ और चेतावनी (लूका. 13:23-35)।
3. यीशु को एक फरीसी के घर बुलाया जाना, और पर्वों पर तीन उपयुक्त सबक (लूका 14:1-24)।
    क. विनम्रता पर एक सबक (लूका 14:7-11)।
    ख. नि:स्वार्थपन पर एक सबक (लूका 14:12-14)।
    ग. बड़ी दावत का दृष्टांत (लूका 14:16-24)।
4. यीशु के पीछे लोगों की भीड़ और एक महत्वपूर्ण सबक (लूका 14:25-35)।

5. चुंगी लेने वालों और पापियों का यीशु के पीछे आना और तीन हृदयस्पर्शी कहानियां, जिनसे सबक मिलता है (लूका 15:1-32):
    क. खोई हुई भेड़ का दृष्टांत (लूका 15:3-7)।
    ख. खोए हुए सिक्के का दृष्टांत (लूका 15:8-10)।
    ग. खोए हुए लड़के का दृष्टांत (लूका 15:11-32)।
6. यीशु अपने चेलों के साथ और अधर्मी भण्डारी के दृष्टांत में एक महत्वपूर्ण सबक (लूका 16:1-13)।
7. यीशु की फरीसियों द्वारा निगरानी और धनी आदमी और लाज़र के ''दृष्टांत'' में एक गम्भीर सबक (लूका 16:14-31)।
8. फुटकर शिक्षा (लूका 17:1-10)।

द. बैतनिय्याह में।
1. लाज़र को जिलाना (यूहन्ना 11:1-46)।
2. महासभा का आदेश (यूहन्ना 11:47-53)।

ध. पलिश्तीन की अन्तिम यात्रा
1. इफ्राइम में जाना (यूहन्ना 11:54)।
2. सामरिया और गलील में से होकर (लूका 17:11ख)।

न. यरूशलेम की अन्तिम यात्रा (लूका 17:11क)।
1. दस कोढ़ियों को चंगा करना (लूका 17:12-19)।
2. राज्य पर शिक्षा (लूका 17:20-37)।
3. प्रार्थना पर दृष्टांत
    क. हठी विधवा का दृष्टांत (लूका 18:1-8)।
    ख. फरीसी और चुंगी लेने वाले का दृष्टांत (लूका 18:9-14)।
4. तलाक पर सवाल-और विवाह पर शिक्षा (मत्ती 19:3-12; मरकुस 10:2-12)।
5. बच्चों के विषय में गलतफहमी और बच्चों की तरह होने पर शिक्षा (मत्ती 19:13-15; मरकुस 10:13-16; लूका 18:15-17)।
6. अनन्त जीवन के विषय में प्रश्न-और धन पर शिक्षा (जवान धनी अधिकारी की कहानी) (मत्ती 19:16-26; मत्ती 10:17-27; लूका 18:18-27)।
7. प्रतिफल पर एक प्रश्न-और दाख की बारी में मज़दूरों के दृष्टांत समेत (मत्ती 20:1-16) परमेश्वर की आशिषों पर शिक्षा (मत्ती 19:27-30; मरकुस 10:28-31; लूका 18:28-30)।
8. अपनी मृत्यु के आने की अपने चेलों को पहले से चेतावनी (मत्ती 20:17-19; मरकुस 10:32-34; लूका 18:31-34)।
9. सेवक होने पर अपने चेलों को शिक्षा (मत्ती 20:20-28; मरकुस 10:35-

45)।

10. बरतिमाई और उसके साथी को अंधेपन से चंगाई देना (मत्ती 20:29-34; मरकुस 10:46-52; लूका. 18:35-43)।
11. जक्कई को लोभ से बचाना (लूका 19:1-10)।
12. अपने चेलों को सुधारना-मोहरों का दृष्टांत (लूका 19:11-27)।

VII. यीशु की सेवकाई का अन्तिम सप्ताह

क. शुक्रवार दोपहर: बैतनिय्याह में पहुंचना (यूहन्ना 11:55-12:1)।

ख. शनिवार सायं: बैतनिय्याह में एक दावत (मत्ती 26:6-13; मरकुस 14:3-9; यूहन्ना 12:2-11)।

ग. रविवार दोपहर: यरूशलेम में विजयी प्रवेश (मत्ती 21:1-11; मरकुस 11:1-11; लूका 19:29-44; यूहन्ना 12:12-19)।

घ. सोमवार: अंजीर के एक पेड़ को श्राप देना, मन्दिर को शुद्ध करना, और अन्धे और लंगड़े को चंगा करना (मत्ती 21:12-19; मरकुस 11:12-19; लूका 19:45-48; 21:37, 38)।

ड. मंगलवार: ''प्रश्नों का बड़ा दिन।''

1. परिचय: सूखा हुआ अंजीर का पेड़ (मत्ती 21:20-22; मरकुस 11:20-26)।
2. अधिकार पर प्रश्न:
   क. प्रश्न और यीशु का उत्तर (मत्ती 21:23-27; मरकुस 11:27-33; लूका 20:1-8)।
   ख. उसके उत्तर का भाग: तीन दृष्टांत
      (1) दो पुत्रों का दृष्टांत (मत्ती 21:28-32)।
      (2) दुष्ट किसानों का दृष्टांत (मत्ती 21:33-46; मरकुस 12:1-12; लूका 20:9-19)।
      (3) राजा के पुत्र के विवाह के भोज का दृष्टांत (मत्ती 22:1-14)।
3. एक के बाद एक प्रश्न:
   क. फरीसी और हेरोदेसी कर देने सम्बन्धी प्रश्न पूछते हैं (मत्ती 22:15-22; मरकुस 12:13-17; लूका 20:20-26)।
   ख. सदूकी पुनरुत्थान के विषय पर पूछते हैं (मत्ती 22:23-33; मरकुस 12:18-27; लूका 20:27-39)।
   ग. एक व्यवस्थापक सबसे बड़ी आज्ञा के बारे में पूछता है (मत्ती 22:34-40; मरकुस 12:28-34; लूका 20:40)।
   घ. यीशु ''मसीह'' के विषय में पूछता है (मत्ती 22:41-46; मरकुस 12:35-37; लूका. 20:41-44)।

4. ग्रन्थियों और फरीसियों की यीशु द्वारा भर्त्सना (मत्ती 23:1-39; मरकुस 12:38-40; लूका 20:45-47)।
5. विधवा का दान (मरकुस 12:41-44; लूका 21:1-4)।
6. भीड़ को संदेश
   क. अन्यजाति यीशु को ढूंढ़ते हैं (यूहन्ना 12:20-22)।
   ख. यीशु की आने वाली मृत्यु-यहूदियों व अन्यजातियों दोनों के लिए (यूहन्ना 12:23-36)।
   ग. यहूदियों द्वारा यीशु का ठुकराया गया (यूहन्ना 12:37-50)।
7. यरूशलेम के विनाश और द्वितीय आगमन पर प्रेरितों को संदेश
   क. टिप्पणियां और प्रश्न (मत्ती 24:1-3; मरकुस 13:1-4; लूका 21:5-7)।
   ख. यरूशलेम के विनाश पर शिक्षा
      (1) यरूशलेम के विनाश से असम्बद्ध घटनाएं (मत्ती 24:4-14; मरकुस 13:5-15; लूका 21:8-19)।
      (2) यरूशलेम के विनाश से जुड़ी घटनाएं (मत्ती 24:15-35; मरकुस 13:14-31; लूका 21:20-36)।
   ग. द्वितीय आगमन पर शिक्षा
      (1) सामान्य शिक्षा
         (क) बिना घोषणा के द्वितीय आगनम (मत्ती 24:36-41; मरकुस 13:32)।
         (ख) तैयार रहने की आवश्यकता (मत्ती 24:42-51; मरकुस 13:33-37)।
      (2) उससे जुड़े दृष्टांत और शिक्षा:
         (क) दस कुंवारियां (मत्ती 25:1-13)।
         (ख) दस तोड़े (मत्ती 25:14-30)।
         (ग) भेड़ें और बकरियां (मत्ती 25:31-46)।

च. बुधवार: तूफ़ान से पहले की शांति।
   1. यीशु: तैयारी कर रहा (मत्ती 26:1, 2; यूहन्ना 13:1)।
   2. महासभा: षड्यन्त्र रच रही (मत्ती 26:3-5; मरकुस 14:1, 2; लूका 22:1, 2)।
   3. यहूदा: विश्वासघात कर रहा (मत्ती 26:14-16; मरकुस 14:10, 11; लूका 22:3-6)।

छ. गुरुवार: फसह के लिए तैयारी (मत्ती 26:17-19; मरकुस 14:12-16; लूका 22:7-13)।

ज. शुक्रवार*: यीशु की मृत्यु का दिन।

1. अन्तिम भोज।
    क. फसह मनाया गया (मत्ती 26:20; मरकुस 14:17, 18; लूका 22:14-18)।
    ख. झगड़े के लिए डांटा गया (लूका 22:24-30)।
    ग. दीनता दिखाई गई (यूहन्ना 13:2-20)।
    घ. पकड़वाए जाने/इनकार होने की भविष्यवाणी हुई (मत्ती 26:21-25, 31-35; मरकुस 14:18-21, 27-31; लूका 22:21-23, 31-38; यूहन्ना 13:21-38)।
    ङ. प्रभु भोज की स्थापना हुई (मत्ती 26:26-29; मरकुस 14:22-25; लूका 22:19, 20; 1 कुरिन्थियों 11:23-26)।
    च. प्रेरितों को प्रोत्साहित किया गया और चेतावनी दी गई (यूहन्ना 14:1-16:33)।
    छ. पिता से प्रार्थना की गई (यूहन्ना 17:1-26)।
2. गतसमनी का बाग (मत्ती 26:30, 36-46; मरकुस 14:26, 32-42; लूका 22:39-46; यूहन्ना 18:1)।
3. विश्वासघात और गिरफ्तारी (मत्ती 26:47-56; मरकुस 14:43-52; लूका. 22:47-53; यूहन्ना 18:2-11)।
4. यहूदी ''मुकद्दमा'' (चरण एक और दो):
    क. चरण एक: हन्ना द्वारा जांच (यूहन्ना 18:12-14, 19-23)।
    ख. कैफा और महासभा द्वारा दोषी ठहराया जाना (मत्ती 26:57, 59-68; मरकुस 14:53, 55-65; लूका 22:54क, 63-65; यूहन्ना 18:24)।
5. पतरस द्वारा इनकार करना (मत्ती 26:58, 69-75; मरकुस 14:54, 66-72; लूका 22:54ख-62; यूहन्ना 18:15-18, 25-27)।
6. यहूदी ''मुकद्दमा'' (चरण तीन): महासभा द्वारा दण्ड (मत्ती 27:1, 2; मरकुस 15:1; लूका 22:66-23:1; यूहन्ना 18:28)।
7. रोमी मुकद्दमा:
    क. चरण एक: पिलातुस के सामने (निर्दोष पाया गया) (मत्ती 27:11-14; मरकुस 15:2-5; लूका 23:2-7; यूहन्ना 18:28-38)।
    ख. चरण दो: हेरोदेस अन्तिपास के सामने (दोषी नहीं पाया गया) (लूका 23:8-12)।
    ग. चरण तीन: पिलातुस के सामने (मृत्यु का दण्ड) (27:15-31क; मरकुस 15:6-20क; लूका 23:13-25; यूहन्ना 18:39-19:16)।

8. यहूदा की मृत्यु: आत्महत्या (मत्ती 27:3-10; प्रेरितों 1:18, 19)।
9. यीशु की मृत्यु: क्रूसारोहण
    क. क्रूस का सफ़र (मत्ती 27:31ख-34; मरकुस 15:20ख-22; लूका 23:26-33; यूहन्ना 19:17)।
    ख. क्रूस पर पहले तीन घण्टे (आरम्भ हुए) (मत्ती 27:35, 37-39; मरकुस 15:23-29; लूका 23:33, 38; यूहन्ना 19:18-22)।

*यहूदी समय के अनुसार, यह दिन सूर्यास्त से आरम्भ हुआ। जिसे हम गुरुवार रात्रि मानते हैं, वह यहूदियों के सप्ताह के छठे दिन का आरम्भ था। दिन का आरम्भ फसह के जश्न से और अन्त यीशु के गाड़े जाने से हुआ।